



मुझे अब तो साखी बड़ी मौज है
रहा गम ना वाकी बड़ी मौज है

मुहब्बत से तूने जगाया मुझे
इलाही नशा है पिलाया मुझे
नजारा ऐ दाना दिखाया मुझे
हकीकत का मार्ग बताया मुझे

मुझे आंख दी तूने ऐसी
कि हर शै में जलवा दिखाया गया
है दुई का गरदा हटाया गया
जो असारे हक दा दिखाया गया
है मस्नो की महफिल में क्या क्या बहार
जो देखे यह दुनिया, करे जो निहार
जो इक जोत का धृंठ पी ले गए यार
तो जीवन में आयेगा फौरन करार

यह इक गम सब भुला देती है
छिपे राज सारे बना देती है
मुहब्बत से जीना सिखा देती है
ये कतरे को दरिया बना देती है।
दिखाया मेरे दिल को सबमें खुदा
मैं उससे, वो मुझसे नहीं अब जुदा
हकीकत का अब तो मिला है मजा
मेरे मुख तो, मस्ती निकले सदा
चलाचल उठायेगा साकी जरूर
न घबरा चलायेगा साकी जरूर



मेरा सतगुरु पीरां दा पीर मेरा मन रंगया गया—२
होके शहनशाह ते नाले पकीर, मेरा मन रंगया गया।

सुध—बुध भुल गई सब तन की
चिंता छूटी जन्म—मरण की
तेरे चरण चे मेरी अखीर, मेरा मन रंगया गयाए मेरा.....
ओ रंगया गया, मेरा मन रंगया गया मेरा

राम दे रंग विच गई मैं रंगी
मन दिता मैं बन गई चारी
मैनू मुहब्बत दी मिली जागीर, मेरा मन रंगया गया मेरा.....
मेरा सतगुरु ओ रंगया

हां पाठ प्रेम दा ऐसा पढ़या
जिसदा नशा सदा लई चढ़या
मेरे मन विच रही न लकीर, मेरा मन रंगया गया मेरा.....
मेरा सतगुरु

हां गुरां ने दिती ऐसी मस्ती
हो भुल गई मैनू मेरी हस्ती
मेरे मन विच तेरी तस्वीर, मेरा मन रंगया गया मेरा.....
मेरा



ਸਤਗੁਰ ਨਜ਼ਰ ਮੇਹਰ ਦੀ ਸੁਟੀ,
ਅਸੀਂ ਝੋਲਿਆਂ ਭਰ ਭਾਰ ਲੁਟੀ,
ਮੇਰੀ ਖੁਲ ਗਈ ਬਾਂਦ ਤਕਦੀਰ, ਮੇਰਾ ਮਨ ਰੰਗਧਾ ਗਿਆ ਮੇਰਾ.....
ਮੇਰੇ ਸਤਗੁਰ.....

ਹੋ ਮੈਨੂ ਸਤਗੁਰ ਮਿਲਿਆ ਪ੍ਰਾਂ
ਰੰਗ ਪ੍ਰੇਮਦਾ ਚਢਿਆ ਗ੍ਰਦਾ
ਤੇਰੇ ਵਚਨਾ ਦਾ ਖੁਬ ਗਏ ਤੀਰ, ਮੇਰਾ ਮਨ ਰੰਗਧਾ ਗਿਆ ਮੇਰਾ.....

ਹਾ ਤੇਰੇ ਮੇਰੇ ਵਿਚ ਭੇਦ ਨ ਕੋਈ
ਤੂ ਮੇਰਾ ਮੈਂ ਤੇਰੀ ਹੋਈ
ਮੇਰਾ ਰਾਝਾਣ ਤੂ, ਮੈਂ ਤੇਰੀ ਹੀਰ, ਮੇਰਾ ਮਨ ਰੰਗਧਾ ਗਿਆ ਮੇਰਾ.....

ਧਾਦ ਤੇਰੇ ਵਿਚ ਹੋ ਗਈ ਝਾਲੀ
ਝਾਲੀ ਹੀ ਨਹੀਂ, ਹੋ ਗਈ ਕਲੀ
ਤੇਰੇ ਪ੍ਰੇਮ ਵਿਚ ਹੈ ਜਾਦਾ ਹੀਰ, ਮੇਰਾ ਮਨ ਰੰਗਧਾ ਗਿਆ ਮੇਰਾ.....

ਜਾਨ ਦਾ ਸਿਰ ਤੇ ਕੋਝਾ ਨ ਰਖਨਾ
ਗੁਰਾਂ ਦਾ ਕਾਮ ਹੈ ਮੁਕਤ ਕਰਨਾ
ਤੂ ਲਡ੍ਹ ਖਾ ਤੇ ਨਾਲੇ ਖਾ ਖੀਰ, ਮੇਰਾ ਮਨ ਰੰਗਧਾ ਗਿਆ ਮੇਰਾ.....



ਮੁੜੇ ਰਥ ਮੇਰਾ ਮਿਲਾਯਾ, ਧੇ ਕਰਮ ਨਹੀਂ ਤੋ ਕਿਆ ਹੈ
ਖੁਦ ਮੈਂ ਖੁਦਾ ਦਿਖਾਯਾ, ਧੇ ਕਰਮ ਨਹੀਂ ਹੈ।

ਮੈਂ ਗਮਾਂ ਕੀ ਧੂਪ ਮੈਂ ਜਾਬ, ਤੇਰਾ ਨਾਮ ਲੇਕੇ ਨਿਕਲਾ
ਮਿਲਿਆ ਰਹਮਤਾਂ ਕਾ ਸਾਧਾ, ਧੇ ਕਰਮ

ਮੇਰੀ ਜਿਦਾਂਗੀ ਕੀ ਬੇਹਦ, ਮਿਲੇ ਆਪਕੇ ਸਹਾਰੇ
ਮੈਂ ਗਿਰਾ ਤੋ ਖੁਦ ਉਠਾਯਾ, ਧੇ ਕਰਮ

ਮੁੜੇ ਲਖਿਤੇ ਜਿਗਰ ਕਰਕੇ, ਮੇਰੀ ਰੂਹ ਮੈਂ ਉਤਰ ਕੇ
ਮੁੜੇ ਅਪਨਾ ਸਾ ਬਨਾਯਾ, ਧੇ ਕਰਮ

ਖਾਮੋਸ਼ ਜਿਦਾਂਗੀ ਕੀ ਧਡਕਨਾਂ ਮੈਂ ਆਕਰ
ਨਾਥ ਸਾਜ ਏਕ ਬਨਾਯਾ, ਧੇ ਕਰਮ

ਇਕ ਸਾਜ ਸਾ ਬਜਾਯਾ, ਧੇ ਕਰਮ

ਇਕ ਗੀਤ ਗੁਨਗਨਾਯਾ, ਧੇ ਕਰਮ

ਜਨਨਤ ਸੇ ਧੂੰ ਉਤਰ ਕੇ, ਮੇਰੇ ਦਿਲ ਮੈਂ ਧੂੰ ਘਰ ਕਰਕੇ
ਨਾਥ ਆਸ਼ਿਧਾਂ ਬਨਾਯਾ, ਧੇ ਕਰਮ

ਹਾਰੇ ਹੁਏ ਦਿਲਾਂ ਕੀ ਇਕ ਤਾਰ ਮੈਂ ਪਿਰੋ ਕਰ
ਨਾਥ ਹਾਰ ਧੇ ਬਨਾਯਾ, ਧੇ ਕਰਮ

ਅਪਨੀ ਗੋਦ ਮੈਂ ਵਿਠਾਯਾ, ਪਲਕਾਂ ਮੈਂ ਛਿਪਾਯਾ
ਦਿਲ ਮੈਂ ਧੂੰ ਸਜਾਯਾ, ਅਪਨੀ ਧਡਕਨਾਂ ਮੈਂ ਸਮਾਯਾ।



मैं तां हो गईया, होर दी होर नी
मेरे सतगुरां फड लई डोर नी.....

सतगुरु मेरे ते कृपा कीति—२

हंसा दी मैनू पदवी दीनि—२

मैं तां भुल गईयां, कागा वाली टोर नी
मेरे सतगुरां.....

अंदर बाहर वसदा जानी—२

सतगुरु दी मैं रमज पहचानी

बंद हो गया, जग वाला शोर नी
मेरे.....

कर कृपा मैनू अपना बनाया

दीन जान चरणां नाल लाया—२

मैनू लेया अपने नाल जोड नी—२
मेरे.....

सतगुरु जद मैनू ज्ञान सुनाया—२

अंदर बाहर दा भेद मिटाया—२

मैनू रही न जग दी लोड नी

मेरे



मुझे गरज न और सहारो की, इक तेरा सहारा काफी है,
मङ्घधार में डुबने वालों को, इक तेरा किनारा काफी है।

१ बन—२ के सहारे ढूटते हैं, ये रसम पुरानी है जग की,
जो ढूटे कभी और छूटे ना, वो तेरा सहारा काफी है....

२ नजरों को धोखा देते हैं, दुनिया के झूठे नजारे,
जो कायम हमेशा रहता है, वो तेरा नजारा काफी है....

३ जहां रिश्वत और सिफारिश से भी, काम नहीं बन सकता है,
मेरी बिगड़ी बन जाने के लिए, इक तेरा इशारा काफी है.....

४ हंसराज पपीहे को मतलब क्या, नदियों और तलावों से,
स्वाती की बरसे बादल से, केवल इक धारा काफी है।



ये तो सच है कि भगवान है
मन न माने तो नादान है
धरती पे रूप साकार का
उस निराकार की पहचान है।

उनकी वाणी सुने, उसको अगल करे,
उनकी आसीस से, सबका जीवन बने,
उनको महसूस करें, उनको दिल में रखे,
उनके उपकार से, मन को विजयी करे,
दिया भगवान ने ज्ञान है
उससे बढ़कर दिया प्यार है। धरती

दादा के ज्ञान से आज होके पावन,
बनाया है हमने अपना ये जीवन,
नया जन्म मिला, नई राहें मिली,
जो सोची न थी, वो खुशियां मिली,
इतने उपकार हैं क्या कहें,
रोम—रोम से महिमा वहे।
धरती.....

सबको प्यार करें, हम ना द्वेष करें,
गुरु का ख्वाब है ये, क्यों न पूरा करें,
मोह माया को छोड, मन का तोड़ेगें हम
मीठ बोलेगें हम, आज निश्चय करें
इतनी शवित दे हमको गुरु
वंदो से हो गए उपराम हम
धरती पे रूप साकार का उस निराकार की पहचान है।



ये सतसंग वाला प्याला कोई पियेगा किस्मत वाला
ये मीठा प्रेग प्याला कोई पियेगा किस्मत वाला

प्रेम गुरु है प्रेम ही चेला,
प्रेम धर्म है प्रेम ही मेला,
प्रेम की फेरों माला, कोई फेरेगा किस्मत वाला

प्रेम बिना प्रभु नहीं मिलता
मन का कष्ट कभी नहीं टलता
प्रेम करे उजियाला कोई करेगा

प्रेम का गहना प्रेमी पाये
जन्म—मरण का दुख मिटाए
काटे कोटि कर्म जंजाला, कोई काटेगा

प्रेग ही सबका कष्ट मिटावें
लाखों से दुराचार छुड़ावें,
प्रेम में हो मतवाला, कोई होएगा



ये कैसी कसक तूने, मेरे दिल में जगा दी है
सोचा था प्यास बुझे, तूने और बढ़ा दी है
सतगुरु को गुहब्बत है, लेकिन वो छुपाते हैं
ये वात मुझे उनकी नजरों ने बता दी है — ये कैसी...

मैखाने क्यों जाए, हम पीकर क्यों आएं
मेरे सतो प्यारे ने, नजरों से पिला दी है ये कैसी...

तकदीर बदलने का, ये ढंग ही निराला है
मेरे मीत, मेरे सजना, तूने रुह जो खिला दी है, ये कैसी...

तेरी वाणी सुनने का, मेरा दिल जो तरसता है
ये प्रीत भी क्या दाता, तूने बना दी है, ये कैसी...

जब नजर मिली मेरी, मदहोश हुआ मैं तो
अब तक न संभल पाया, तूने इतनी पिला दी है, ये कैसी...



ये सैर क्या है अजब अनोखा,
कि राम मुझमें, मैं राम में हूं,
बगैर सूरत अजब है जलवा,
कि राम मुझमें, मैं राम में।

- १ मुरुकाए हुसनो इश्क मैं हूं, मुझी मैं नाजो न्याज सब है
हूं अपनी सूरत पे आप शैदा, कि राम मुझमें.....
- २ जमाना आईना राम का है, हर एक सूरत से है वो पैदा,
जो चश्मे हक भी खुली तो देखो, कि राम मुझमें.....
- ३ वो गुड़ामें हर रंग में मिला है, कि गुल से बूँगी कभी जूदा है,
हृदाबों दरिया का है तमाशा, कि राम....
- ४ सबब बताउं मैं बजद का क्या, है क्या जो दर पर्दा देखता हूं,
सदा वो हर साज से है पैदा, कि राम.....
- ५ बसा है दिल में तेरे वो दिलबर, है आईना मैं खुद आईना गर,
अजब तहयुर हुआ से कैसा, कि राम.....
- ६ गुकाम पृछो तो ला मका था, राम ही था न मैं वहां था,
लिया जो करवट तो होश आया, कि राम.....
- ७ जहाज दरिया में और दरिया जहाज में भी तो देखिए आज,
ये जिस्म कशती है राम दरिया, कि राम....



राम नाम की नैया लेकर सतगुरु करे पुकार,
आओ मेरी नैया में ले जाऊंगा भव पार।

इस नैया में जो कोई चाह जाएगा,
जन्म जन्म के पाप सभी धुल जाएगा,
कटे, चौरासी के बंधन और पडे न जम की मार
आओ मेरी नैया.....

पाप गठरिया सीस धरी कैसे आऊं मैं,
अपने ही अवगुण से खुद शरमाऊं मैं,
नैया तेरी सांची भगवन, मेरे पाप हजार।
आओ मेरी नैया.....

जीवन अपना सौंप दू मेरे हाथों में,
श्वास—श्वास को पोत दो मेरी यादों में,
पाप—पुण्य का बनकर आया मैं तेरा ठेकेदार,
आओ मेरी नैया.....

करके दया सतगुरु ने चुनरिया रंग डाली,
जन्म जन्म की मैली चादर धो डाली,
दाग भरी थी मेरी चुनरिया
करदी लालो—लाल । आओ मेरी नैया.....

बडे भाग्य से सतगुरु जी का ज्ञान मिला
मुझ प्रेमी को जीने का आधार मिला,
लगी झूँबने बीच भंवर में आ गया खेवनहार
आओ मेरी नैया.....



रहमता करदा ऐ झोलियां भरदा ऐ जी
पीरां दा पीर मेरा शाही फकीर
मेरा सतगुरु प्यारा ऐ—२

जद आन पडे जो शरणी
कर देंदा मालो माल
तुसी लुट लो संगदा लुट लो
मेरा सतगुरु दीन—दयाल, भरे भंडारे जी
ये कहदें सारे ने, पीरां दा पीर.....

ये रव है सतगुरु मेरा
ऐनू समझ न कोई बंदा
ओ मिटा दे विच कटदा
चौरासी वाला फेरा, देर नहीं लादा ऐ
निश्चय करांदा ऐ, पीरां दा पीर.....

मेरे सतगुरु जी दा द्वाग
सारी दुनिया कोलो न्यारा
सारे दुखां दी इको दवाई
ऐ दसदा जांदा प्यारा,
प्रेम ने वर्षा की, ऐ मस्त बनांदा ऐ,
पीरां दा पीर.....

ॐ

रसना पे अगर तेरा नाम रहे
 जग पे फिर नाम रहे ना रहे
 मन मंदिर में धनश्याम रहे
 शूठा संरार रहे न रहे
 दिन रैन हरि का ध्यान रहे
 कोई और फिर ध्यान रहे ना रहे
 तेरी कृपा का अभिमान रहे
 कोई और अभिमान रहे ना रहे—२
 गोपाल राधा कृष्ण गोविंद—२—२
 कृष्णा गोविंद—२—२
 गोपाल राधा कृष्ण गोविंद—२—२

ॐ

हे

मेरा यार नंद नंदन हो चुका है
 वो जान हो चुका है जिगर हो चुका है
 ये सच जानिए उसकी हर इक अदा पर —२
 जो कुछ पास था वो नजर हो चुका है—२
 जगत की सभी खूबियाँ मैंने छोड़ी
 जो दिल था इधर अब उधर हो चुका है
 वो उस मस्त की खुद ही लेता खबर है—२
 जो उसके लिए बेखबर हो चुका है—२
 गोपाल

असी अपना श्याम मनावांगे
 सादो जगत मनाया नहीं जांदा
 असी अपना श्याम रिझावांगे—२
 सादो जगत रिझाया नहीं जांदा
 असी शाम दे हां शाम साडा ए
 ए भेद छिपाया नहीं जांदा
 इस दिल विच सूरत श्याम दी ए—२
 कोई होर बसाया नहीं जांदा—२
 गोपाल

सारे जग दी खुणियाँ इक पासे
 मेरा श्याम प्यारा इक पासे
 दुनिया दा चानन इक पासे—२
 मेरा श्याम उजियारा इक पासे—२
 की इसदा हाल सुनावा मैं
 कुजे विच दरिया नृ पावां मैं

लखां गहरे समुद्र इक पासे—२
ऐदे दिल दा किनारा इक पासे—२
गोपाल.....

सानू लोड की सारे जमाने दी—२
इक श्याम प्याग काफी है—२
असी सारे सहारे छड दिते—२
इक तेरा सहारा काफी ऐ
प्रहलाद दी विगड़ी बनाई सी
नरसी दी हुंडी तराई सी
तू चाहे ता पल विच पार करे—२
तेरा इक इशारा काफी है—२
गोपाल.....

आपके दर पे रखके उठाऊं जो सर—२
ये इबादत को मेरी गंवारा नहीं
मेरी हालत पे मोहन करम कीजिए—२
मेरी दुनिया में कोई सहारा नही—२
अपने विगडे मुकद्दर पे लाचार हूं—२
इक निगाहे करम का तलबदार हूं—२
दिन तो यूं भी गुजर ही रहे हैं मगर—२
बिन तेरे करम के गुजारा नहीं—२
राधे—२ गोविंद गोविंद राधे—२
गोविंद राधे.....



लगन सतगुरु से लगा वैठे, जो होगा जाएगा
तुम्हें अपना बना वैठे, जो होगा देखा जाएगा।

कभी दुनिया से डरते थे, जो चुप चुप प्यार करते थे
कि अब वंधन छुडा वैठे, जो होगा देखा जाएगा।

किया कुर्बान अपना दिल, प्रभु के कोमल चरणों में,
जन्म की बाजी लगा वैठे, जो होगा देखा जाएगा।

तुम्हारी बेबेसी से दिल जो मेरा टूट जाएगा
रहेंगे हम न इस तन में, जो होगा देखा जाएगा।

तुम्हारी लगन लगा कर के, अनेको पापी तरते हैं,
कदम आगे बढ़ा वैठे, जो होगा देखा जाएगा।

लगन सतगुरु से लगा वैठे, जो होगा देखा जाएगा
तुम्हें अपना बना वैठे, जो होगा देखा जाएगा।



वडे मेरे साहिबा गहर गंभीरा, गुणी गहीरा
कोय न जाने तेरा किता केवड चीरा।

सुन वड आंखे सब कोय, एवड वडा डीठा कोय
कीमत पाये न कहया जाये
कहने वाले तेरे रहे समाये। वडे.....

सब सूरत में सूरत समाये
सबकी मत मिलके मत पाई
ज्ञानी ज्ञान गुरु गुरु गाई,
कहना जाई तेरी तिल पड़ियाई। वडे.....

सिद्र पुरखा कीयां वडियाईया
सब सत् सब जय सब वडियाइयां
तुझ बिन सिद्धि किने ना पाइयां
कर्म मिले नाहि ठाकुर माइयां। वडे.....

आवरण वाला क्या बेचारा
सिफती करे तेरे गुण गाया
जिस तृ देवे तिरो क्या चारा,
नानक सच संवारन हारा। वडे.....



वो जुवां कहां से लाऊं, जिससे करूं मैं शुक्रिया
ऐसा तो कुछ किया ना, जिससे तू मुझको है मिला
वो.....

कितने ना भटके थे हम, फिर भी उठा लिया है
कितना ना कष्ट सहकर, अपना बना लिया है।
वो.....

मेरे जन्म—२ के साथी, अब तो तुम्हें पहचाना
खुद कृष्ण बनके मुझको, गोपी बना दिया है।
वो.....

बेगमपुर का बादशाह, हमको बना दिया है
करके आत्मज्ञान की वर्षा, प्रेमी बना दिया है
वो.....

मेरी नींद चुराने वाले, कैसे मैं होश संभालूं
दिल दिया जो मैंने तुझको, अब कैसे किसे बिठाऊं
वो.....

जन्म मरण मिटाने वाले, अब कैसे तुझे गुला दूं
वो कलम नहीं है गिलती, जिससे शुक्रिया लिखूं मैं
वो.....

ॐ

शुकराने के गीत हम गाये—२
गाते ही जाये जीवन में,
कि वाह वाह की आदत ऐसी डाले,
शिकवे न हो जीवन में।

दुख से तेरा क्या है नाता
गुरु हर दम हमें है समझाता,
ये दुनिया सपनों का है मेला,
बड़ी मुश्किल है कोई जानता,
के सपनों से जाग हम जाए, जब है हमने जाना। के वाह.....

हालत आए चाहे जैसी
रुक न पाये मन की मरनी,
रातें कितनी भी हो चाहे लंबी,
लेकिन फिर भी सुबह तो आएगी
के मन में भाव जाग तेरा जाए, रोशनी आए जीवन में के वाह.....

जीवन नैया बड़ी कमजोर है,
पर साहिब मेरा बड़ा जोर है,
रुकना कैसा, झुकना कैसा,
जब सतगुरु भेरे सिर मोर है
के हर पल वो साथ मेरे आए—मंजिल पाए जीवन में के वाह.....

ॐ

श्वासों की डोरी से तू सिमरन के मोती पिरो ले,
मेरा हर श्वास तू ही तू ही बोले—

रसना बोले न बोले मन बोलता है,
सिमरन के सच्चे हीरे मन बोलता है,
मेरे जैसे न कोई धनवान होगा,
हर पल प्रभु से जुड़ा जो ध्यान होगा,
मीरा कबीरा जैसी मस्ती चढ़ेगी होले—होले,
मेरा हर श्वास.....

जैसे सिया के मन में राम बसे है,
जैसे राधा के मन में श्याम बसे है,
ऐसा बसा ले तू भी दाता को गन में,
आनंद छाया रहे हर पल जीवन में,
भक्ति में झूबा रहे, भक्ति का रंग जो घोले,
मेरा हर श्वास.....

आज भी सतगुरु जी ने सिमरन दिया है
प्यारा है उनका जिसने सिमरन किया है
सारे दुखों की सिमरन एक दवा है
ग्रन्थों में प्यारे प्रेमी सिमरन लिखा है
सिमरन करने वाले का मन कभी न डोले
मेरा हर श्वास.....



श्वास—श्वास सिमरों गोविद,
गन अंतर की उतरे चिंत।

पूरे गुरु का सुन उपदेश,
पार ब्रह्म निकट कर देख। श्वास.....

आस अनित्य त्यागो तरंग,
साध जना की छूटे गन रंग। श्वास.....

आप छोड़कर विनती करो,
संत जना संग सागर तरी। श्वास.....

सखा सबका एको रखामी,
सकल धटा का अंतर्यामी। श्वास

हरि धन के भर लियो भंडारा,
नानक गुरु पूरे नमस्कार। श्वास.....



श्वासां दी माला नाल, सिमरा मैं तेरा नाम—२
बन जावां बंदा मैं तेरा, हे कृपा निदान—२

संगता दी सेवा करदा रहां मैं—२
चरणा ते मस्तक धरदा रहां मैं—२
मेरी खल दे जोडे, गुरु दे सिख हंडाण। श्वासा.....

ठाड़ी हां मैं सतगुरु दे धर दा—२
चंगा या मंदा हां बंदा मैं उसदा
मेरा है तन मन ओना तो कुर्बान। श्वासा.....

ऐसी ही कृपा करो प्रभु मेरे —२
छड़िये जंजाला नृ बन जाईये तेरे
जिस पल तू बिसरे निकल जाये मेरी जान। श्वासा.....

गुरु मैनू पिला दे, अमृत दा प्याला,
रंग दे मेरे दिल नृ मैं हो जा मतवाला,
मैनू ऐ सतगुरु जी तेरे दर्शन दी तांग। श्वासा.....

कोटा ब्रहमडां दा मालिक तू स्वामी
सबना नृ देंदा तू अंतर्यामी
तू देंदा नहीं थकदा युगों युगों देंदा ऐ दान। श्वासा.....

सदा पकड़ो मेरी बांह किशे रूल ना जावां
सुखा विच रह के तेनू भुल न जावां
चरणा नाल जोडो, गुरु जी मैनू अपना जान श्वासा.....



ਸ਼ੁਕ ਰਵਾ ਮੈਨੂ ਸਤਗੁਰੂ ਮਿਲਧਾ

ਜਨਮ ਜਨਮ ਦੇ ਅਂਧਕ੍ਰਿਪ ਤੋ
ਬਾਹ ਪਕਡ ਕੇ ਕਡਧਾ। ਸ਼ੁਕ.....

ਸਤਗੁਰੂਜੀ ਮੈਨੂ ਚਰਣੀ ਲਾਧਾ
ਅਜ ਮੇਰਾ ਚਨ ਚਢਧਾ ਏਥੁਕ.....

ਇਕ ਵਾਰੀ ਸਤਗੁਰੂ ਸ਼ਾਰਣੀ ਆਧਾ
ਫਿਰ ਪਲਲਾ ਨਹਿਯੋ ਛਡਧਾ। ਏਥੁਕ.....

ਜਾਨ ਦੀ ਏਸੀ ਜੋਤ ਜਲਾਈ
ਦੇਹ ਦਾ ਭਰਮ ਹੀ ਮਿਟਧਾ ਏਥੁਕ.....

ਪ੍ਰੇਮ ਦਾ ਏਸਾ ਚੋਲਾ ਪਹਨਾਧਾ
ਫੇਰ ਨੂੰ ਪੀਛੇ ਛਡਧਾ। ਏਥੁਕ.....

ਸਥ ਵਿਚ ਤੁਸਦਾ ਨੂਰ ਛਲਕਦਾ
ਏਸਾ ਨਿਆ ਹੈ ਚਢਧਾ। ਏਥੁਕ.....

ਸਤਗੁਰੂ ਜੀ ਦਾ ਮੇਲ ਜੋ ਹੋਧਾ
ਜਨਮਾ ਦਾ ਪੁਣਿ ਖਟਧਾ। ਏਥੁਕ.....



ਜਪੋ ਸਤਨਾਮ—੨—੨, ਵਾਹੇ ਗੁਰੂ—੨—੨ ਜਪੋ ਸਤਨਾਮ—੨—੨
ਪਲ—੨ ਜਪਾਂ ਤੇਰਾ ਨਾਮ, ਵਾਹੇ ਗੁਰੂ
ਤੂ ਹੀ ਪਿਤਾ, ਤੂ ਹੀ ਮਾਂ, ਵਾਹੇ ਗੁਰੂ, ਸਤਨਾਮ

ਪਛਿਧੇ ਸਕੇਰੇ ਵਾਣੀ ਜਯ ਸਾਹਿਬ ਦੀ,
ਸੁਨਦੀ ਹੈ ਧੁਨ ਤੇਰੇ ਹੀ ਰਖਾਬ ਦੀ—੨
ਅਸ੍ਰਤ ਕੇਲੇ ਜਦੋ ਮੀਠੀ—੨ ਵਾਣੀ ਵਿਚ,
ਗੁੰਜਦਾ ਸਾਰਾ ਆਸਮਾਂ, ਵਾਹੇ ਗੁਰੂ
ਤੇਰੀ ਹੀ ਬਦਗੀ ਕਰਾਂ . ਵਾਹੇ ਗੁਰੂ,
ਹੋਰ ਨ ਫੂਜੀ ਕੋਈ ਥਾਂ। ਵਾਹੇ ਗੁਰੂ
ਹਰ ਪਲ.....

ਸ਼ਾਮ ਕੇਲੇ ਪਢਾ ਰਹਸਾਸ ਗੁਰੂਜੀ
ਹਥ ਜੋਡ ਕਰਾਂ ਅਰਦਾਸ ਗੁਰੂਜੀ
ਦੁਖਾਂ ਤੇ ਕਲੇਪਾ ਵਿਚ, ਸਡ—੨ ਜਾਦੇ ਭਗਤਾਂ ਦੋ
ਤੇਰਾ ਸਹਾਰਾ ਠਡੀਂ ਛਾਂ . ਵਾਹੇ ਗੁਰੂ,
ਤੇਰੇ ਸਹਾਰੇ ਮੈਂ ਤਰਾਂ ਵਾਹੇ ਗੁਰੂ
ਹਰ ਪਲ.....

ਮਿਟਠੀ — ਤੇਰੀ ਵਾਣੀ ਕਰ ਦੀ ਏ ਜਂਜਾਲ ਜੀ
ਸੁਣ—੨ ਹੋਏ, ਸਾਂਗਤਾ ਮਿਹਾਲ ਜੀ
ਪਾਪਾ ਦੇਧਾਂ ਸਾਗਰਾਂ ਵਿਚ, ਕਦ—੨ ਲੇਂਦੇ,
ਫਡੀ ਤੂ ਦਾਤਾ ਜੀ ਦੀ ਬਾਹ ਬਾਹੇ ਗੁਰੂ
ਚਰਣਾਂ ਤੋ ਕਰੀਂ ਨਾ ਪਰਾ ਵਾਹੇ ਗੁਰੂ
ਮਾਂਗਾ ਮੈਂ ਮਾਂਗਾ ਤੇਰਾ ਨਾਂ, ਵਾਹੇ ਗੁਰੂ
ਹਰ ਪਲ.....

जगया जिन्हानें तेरा सच्चा नाम जी,
लख लख उनां ताई प्रणाम जी
आपे तृ बनावें दाता, आपे तृ मिटावें दाता
सारा जगत है सरां, वाहे गुरु
बड़ा है दाता तेरा नाम वाहे गुरु
फड़ी निमाणयां दी बांह वाहे गुरु
हर पल जपां तेरा नाम वाहे गुरु



सतगुरु ने चुपके से मेरे कानों में,
एक नया, राज नया बताया है,
आत्म रूप हूं, मैं तो ब्रह्म रूप हूं—२

ब्रह्म हूं, विष्णु हूं, शिव भी हूं,
आत्म रूप

आनंद हूं अनंता हूं, एक ही हूं
आ०

निर्मल हूं, निश्चल हूं, निरंजन हूं
आ०

जड भी हो, चेतन हूं, पूर्ण हूं
आ०

आओ तुम्हें कानों में सुनाऊं मैं
राज नया, इक बात नई बताऊं मैं
आ० रूप हूं, तुम भी ब्रह्म रूप हो,
तुम भी ब्रह्म रूप हो।



ਸਤਗੁਰ ਪਾਯਾ ਤੇ ਹੋ ਗਈਆ ਨਿਹਾਲ ਨੀ ਸਿੰਘਿਆਂ,
ਸੀਪ ਨਿਵਾਯਾ ਤੇ ਸਤਗੁਰ ਮੇਰੇ ਨਾਲ ਨੀ ਸਿੰਘਿਆਂ

ਨੀ ਮੈਂ ਭਜਦੀ ਸਾ ਜਾਂਗਲਾ ਪਹਾਡਾ
ਨੀ ਮੈਂ ਲਵਦੀ ਸਾ ਗੰਦਰਾ ਮਸੀਦਾ
ਓ ਅੰਦਰ ਬੈਠੇ ਦਾ ਆਧਾ ਨ ਖ਼ਾਲ ਨੀ ਸਿੰਘਿਆਂ। ਸਤਗੁਰ

ਜਦੋ ਪੁਛਿਆ ਤੇ ਕੁਛ ਵੀ ਨਾ ਬੋਲਿਆ,
ਜਦੋ ਬੋਲਿਆ ਤੇ ਭੇਟ ਸਾਗ ਖੋਲਿਆ,
ਗਲਾ ਕਰਦਾ ਹੈ ਹਸ ਹਸ ਮੇਰੇ ਨਾਲ ਨੀ ਸਿੰਘਿਆਂ। ਸਤਗੁਰ
ਓਖੇ ਵੇਲੇ ਮੈਂ ਜਦੋ ਵੀ ਪੁਕਾਰਿਆ
ਵਾਂਹ ਪਕਡ ਕੇ ਪਾਰ ਤਤਾਰਿਆ
ਓ ਨਾ ਸਹਦਾਂ ਏ ਅੰਗ ਸੰਗ ਮੇਰੇ ਨਾਲ ਨੀ ਸਿੰਘਿਆਂ। ਸਤਗੁਰ

ਪੁਛਿਆ ਚਾਵਾਂ ਤੇ ਵਾਣੀ ਵਿਚੋ ਆ ਗਿਆ
ਦਸਗਾ ਚਾਵਾਂ ਤੇ ਜਵਾਬ ਅੰਦਰੋਂ ਆ ਗਿਆ
ਮੁਸ਼ਕਰਾਵਾਂ ਤੇ ਕਰਾ ਸ਼ੁਕਰਾਨੇ ਨੀ ਸਿੰਘਿਆਂ। ਸਤਗੁਰ
ਓ ਨਾ ਰਖਦਾ ਹੈ ਪਲ ਪਲ ਦਾ ਖ਼ਾਲ ਨੀ ਸਿੰਘਿਆਂ
ਓ ਤਾਂ ਰਹਦਾ ਹੈ ਹਰ ਪਲ ਮੇਰੇ ਨਾਲ ਨੀ ਸਿੰਘਿਆਂ
ਸਤਗੁਰ ਪਾਰੇ ਦੇ ਨਾਲ ਮੇਰਾ ਪਾਰ ਨੀ ਸਿੰਘਿਆਂ
ਦਰਨਿ ਪਾਧਾ ਤੇ ਹੋ ਗਿਆ ਨਿਹਾਲ ਨੀ ਸਿੰਘਿਆਂ। ਸਤਗੁਰ



ਸਤਸਾਂਗ ਵਾਲੀ ਨਗਰੀ ਚਲ ਰੇ ਮਨਾ
ਪੀ ਹਰੀ ਨਾਮ ਕਾ ਜਲ ਰੇ ਮਨਾ।
ਇਸ ਨਗਰੀ ਮੈਂ ਪ੍ਰੇਮ ਕੀ ਗੰਗਾ
ਜੋ ਵੀ ਨਹਾਏ ਹੋ ਜਾਏ ਚੰਗਾ
ਤੂ ਭੀ ਮਲ—ਮਲ ਕੇ ਹੋ ਨਿਰਮਲ ਰੇ ਮਨਾ। ਸਤਸਾਂਗ....
ਸਤਸਾਂਗ ਕੇ ਹੈ ਅਜਿਥ ਨਜ਼ਾਰੇ
ਵਹੁਤ ਸੁਹਾਨੇ, ਵਹੁਤ ਪਾਰੇ,
ਪਾ ਸੁਖ ਸ਼ਾਂਤਿ ਕਾ ਫਲ ਰੇ ਮਨਾ। ਸਤਸਾਂਗ....
ਸਤਸਾਂਗ ਕਾ ਯਹ ਅਸਰ ਹੁਆ ਹੈ
ਵਾਹਰ ਸੇ ਸਥ ਬਦਲ ਗਿਆ ਹੈ
ਅੰਦਰ ਸੇ ਤੂ ਭੀ ਬਦਲ ਰੇ ਮਨਾ। ਸਤਸਾਂਗ....
ਸਤਸਾਂਗ ਕਾ ਹੈ ਫਲ ਨਿਰਾਲਾ
ਮਨ ਮੰਦਿਰ ਮੈਂ ਕਰ ਦੇ ਤਜਾਲਾ
ਕਰ ਜੀਵਨ ਕੋ ਸਫਲ ਰੇ ਮਨਾ। ਸਤਸਾਂਗ....
ਕਿਸਮਤ ਕਾ ਚਮਕਾ ਹੁਆ ਸਿਤਾਰਾ,
ਉਦਿਦ ਹੁਆ ਹੈ ਭਾਗਿ ਹਮਾਰਾ,
ਅਵਸਰ ਜਾਧੇ ਨ ਨਿਕਲ ਰੇ ਮਨਾ ਸਤਸਾਂਗ....
ਚਲ ਰੇ ਪਥਿਕ ਸ਼ੁਭ ਲਾਭ ਤਠਾ ਲੇ
ਰੇ ਮਨਾ ਇਸ ਅਵਸਰ ਸੇ ਲਾਭ ਤਠਾ ਲੇ
ਦੇਰ ਨ ਕਰ ਇਕ ਪਲ ਰੇ ਮਨਾ। ਸਤਸਾਂਗ....



ੴ ਸਤਗੁਰ ਮੇਰੇ ਹੈਂ ਮਸ਼ਾਨੇ, ਲਾਦੇ ਸਬੂਨ੍ ਠੀਕ ਨਿਸ਼ਾਨੇ
ਮਸ਼ੀ ਫਿਰ ਏਇਧੋ ਝਲਕਾਧੋ, ਨ ਕੋਈ ਇਚਛਾ ਤੇ ਨੋ ਕੋਈ ਚਾਹ,
ਹਰ ਵੇਲੇ ਬੋਲੋ ਵਾਹ ਭਈ ਵਾਹ

ਮੈਖਾਨੇ ਦੀ ਤਾਕੀ ਲਾਈ
ਪੀ ਗਏ ਇਕੋ ਡਿਗ ਲਗਾਈ
ਮਸ਼ੀ ਫਿਰ ਇਕੋ ਝਲਕਾਈ
ਨ ਕੋਈ ਇਚਛਾ ਤੇ

ਚਾਹੇ ਸੁਖ ਦੁਖ ਭੀ ਆ ਜਾਏ
ਇਸੇ ਮੈਂ ਮਾਨ ਸਮਝ ਅਪਨਾਊ
ਫਿਰ ਭੀ ਯਹੀ ਆਵਾਜ਼ ਲਗਾਏ
ਨ ਕੋਈ ਇਚਛਾ

ਮਿਲ ਗਈ ਸਚਨੀ ਰਾਹਨਸ਼ਾਈ .
ਪਾਸ ਨ ਹੋਵੇ ਧੇਲਾ ਪਾਈ,
ਮਸ਼ਾ ਏਧੋ ਆਵਾਜ਼ ਲਗਾਈ,
ਨ ਕੋਈ ਇਚਛਾ ਤੇ

ਸਤਗੁਰ ਮੇਰੇ ਹੈ ਮਤਵਾਲੇ, ਪੀਟੇ ਅਮ੃ਤ ਵਾਲੇ ਪਾਲੇ
ਪਿਲਾਦੇ ਅਮ੃ਤ ਵਾਲੇ ਪਾਲੇ
ਪੀਕਰ ਯਹੀ ਆਵਾਜ਼ ਲਗਾਈ, ਨ ਕੋਈ ਇਚਛਾ ਤੇ ਨ
ਕੋਈ ਚਾਹ, ਹਰ ਵੇਲੇ ਬੋਲੋ ਵਾਹ ਭਈ ਵਾਹ



ਸਾਂਤਾ ਦਾ ਸਾਂਗ ਬਡੇ ਪਾਗਾ ਨਾਲ ਮਿਲਦਾ,
ਪਾਦੋਂ ਨੇ ਕੋਈ ਪਾਗਾ ਵਾਲੇ,
ਸਾਂਤਾ ਦੇ ਘਰ ਵਿਚ ਮੌਜ ਬਹਾਰਾ,
ਲੁਟਦੇ ਨੇ ਕੋਈ ਪਾਗਾ ਵਾਲੇ ।

ਕਈ ਜਨਮਾ ਦਾ ਜੇ ਪੁਨ ਹੋਵੇ
ਤਾ ਸਾਂਤਾ ਦਾ ਦਰਸਨ ਹੋਵੇ,
ਸਾਂਤਾ ਦੇ ਸਾਂਗ ਨਾਲ ਤਰੇ ਅਨੇਕਾ
ਤਰੇ ਨੇ ਕੋਈ ਪਾਗਾ ਵਾਲੇ । ਸਾਂਤਾ

ਜੋ ਸਾਂਤਾ ਦੀ ਸ਼ਾਰਣੀ ਆਏ
ਬਿਛਡਿਆਂ ਰਨਹਾਂ ਮੇਲ ਕਰਵਾਏ
ਯੁਗ ਤੋਂ ਬਿਛਡਿਆ ਰਾਮ ਮਿਲਾਵੇ
ਮਿਲਦੇ ਨੇ ਕੋਈ ਪਾਗਾ ਵਾਲੇ । ਸਾਂਤਾ

ਸਾਂਤ ਦੀ ਇਚਛਾ ਤੇ ਤ੍ਰਣਾ ਹੈ ਬੁੜਾ ਗਈ
ਜਗ ਵਿਚ ਆਏ ਨਾਰਣ ਦੀ ਸੁਝਾ ਗਈ
ਮਰਦੇ ਦੇ ਸਾਂਗ ਨਾਲ ਮਰੇ ਅਨੇਕਾ
ਮਰਦੇ ਨੇ ਕੋਈ ਪਾਗਾ ਵਾਲੇ । ਸਾਂਤਾ

ਸਾਂਤ ਤੇ ਰਖ ਦਾ ਰੂਪ ਹੀ ਹੈ
ਰੂਪ ਵਿਚ ਓ ਅਰੂਪ ਹੀ ਹੈ
ਤਉਕਾ ਘਡਾ ਤੇ ਛਲਕੇ ਹੈ ਹਰ ਪਲ,
ਨਹਾਦੇ ਨੇ ਕੋਈ ਪਾਗਾ ਵਾਲੇ । ਸਾਂਤਾ

ਨਾਮ ਦਾ ਰੰਗ ਇਸ ਜੀਵ ਨੇ ਪਾਇਥੇ
ਕ੍ਰਹਮ ਹੀ ਹੈ ਤ੍ਰਿਤੁ ਨੂੰ ਬਤਾ ਦੇ।
ਸਚ ਦਾ ਸੌਦਾ ਦੇਵਨ ਨੂੰ ਆਂਦੇ,
ਲੇਂਦੇ ਨੇ ਕੋਈ ਪਾਗਾ ਵਾਲੇ । ਸਾਂਤਾ



साधो चुप का है विस्तारा—२

धरती चुप है, पवन भी चुप है
चुप है चांद सितारा

अग्नि चुप है, गगन भी चुप है
चुप है सूजनहारा । साधो

मंदिर चुप है, मस्जिद चुप है
चुप है मंदिर भी सारा,
वेद—पुराण ग्रंथ सब चुप है
चुप है जहानू सारा । साधो

पहले चुप थी, पीछे चुप है
जाने जाननहारा,
ब्रह्म चुप है, विष्णु चुप है
चुप है शंकर प्यारा । साधो

पर्वत चुप है, नदिया चुप है,
चुप है गुरु का द्वारा
ब्रह्मानन्द जो चुप में चुप है
मिल जाये सुख सारा । साधो

हम भी चुप है, तुम भी चुप हो,
चुप है सकल संसारा,
सर्वानन्द जो चुप में चुप हैं,
चुप में करें दीदारा । साधो



सतगुरु मैं तेरी पतंग
हवा विच उड़दी जावांगी
ओ श्यामा डोर हथों छड़ी ना
मैं कटी जावांगी ।

बड़ी मुश्किल दे नाल मिलया
मैनू तेरा द्वारा ऐ—२

मैनू इको तेरा आसरा नाल तेरा सहारा ऐ,
हुन तेरे ही भरोसे हवा विच उड़दी जावांगी
ओ श्यामा

हुन चरणा कमल नालो

मैनू दूर हटाई ना—२
इस झूठे जग दे अंदर मेरा पेचा लाई ना,
जे कट गई ता सतगुरु फिर मैं लुटी जावांगी
ओ श्यामा

हुन मलया बुआ आके

मैं तेरे द्वारे दा—२
हथ रख दे तू इक वारी मेरे सिर ते प्यार दा
फिर जन्म—मरण दे फेरे तो मैं बचदी जावांगी
ओ श्यामा.....



संईयो नी सोहनी सूरत वाला
सारे जग तो निराला मेरा पी

चन जय मुखडे तो वारी मैं जावाँ
वारां मैं लाल ही लाल
सौदा रुहां दा इक दासु मेरा सतगुरु
रज के कर लो प्यार
संईयो नी मेरे मन दे अंदर
वस गई सोहनी तस्वीर.....

अम्बर इसदी आरती करदा
लेके सूरज तो ताप
लुक चंदा बदला तो झांतियां मारे
पांदा ऐ प्रभु नूँ ज्ञान
सईयो नी ऐना दा लड पकड लो
करदे ने भव तो पार.....

रत्नमिल सारे गुरु शरणी आओ
अपने मन दी ज्योत जगाओ
सईयो नी मेरा सतगुरु प्यारा
लांदा ऐ हृदय दे नाल
सईयो नी गुरु बनके आया है साकार.....



सतगुरु प्यारे ने कितने बचाया है
हंसने लगी जिंदगी, मन मुस्कराया है।

दिव्य दृष्टि देकर, अंधेरा मिटाया है
नजरे नूरानी से स्वरूप लखाया है
गिर गए थे हग्म तो, गुरु ने बचाया है। हंसने.....

अबगुण नहीं देखे, गले से लगाया है
अनमोल खजाना देकर, वादशाह बनाया है
विषयों के कीचड में, गिरने से बचाया है। हंसने.....

मुरझाया मन का चमन, गुरु ने खिलाया है
भूल गये थे हंसना, गुरु ने हंसाया है
संसार सागर से, गुरु ने तराया है। हंसने.....

मन पर जन्मो कर गफलत का पर्दा था
दुई का पर्दा हटा कर, नींद से जगाया है
कैसे भूलूँ रहमत, तन मन चमकाया है। हंसने.....



साडे वेडे विच पैन लशकारे हां लशकारे
साडे धर, राम आ गए कि साडे धर राम आ गए
कदी वेडे टपां कदी टपां मैं चौबारे, कि.....

- १ सुन के आवाज तेरी, आत्मा वी डोली ए
साडे धर उतरी इक सतां दी टोली ए
मैं ते वेख रहीयां अजब नजारें, कि साडे धर.....
- २ आज साडे वेडे विच, सतगुरु आए
रहमतां ते खुशियां दा मीह बरसाए
आज हो रही लीला अपरमपार, कि
- ३ गुरु महाराज मेरा कृष्ण मुरार है
नीवां नीवां चोला उसदा जलवा कमाल है
सारी संगत बोले जय जय कारे कि साडे.....
- ४ आत्मा मेरी ने वर फर पाया है
मुदतां दा बिछुड़या होया शाम घर आया है
मेरे जग पये भाग सितारे, कि साडे घर.....



सानू रोग लान वालया—२
कदी टकरे ते हाल सुनावा—२

अख लाई मैं जदों दी तेरे नाल.....
अख लावा अख ना लगे।
गल मुकी ना सजन नाल मेरी—२
रवा मेरी रात मुक गई—३
मेरी खुल गई पटख देखो अख जी—२
गली दे विचो कौन लंगया—२
गली दे विचो मेरा प्यारा लंगया..
सानू मिल गई खुदाई चना सारी—२
तेरे नही ख्याल भुलदे—२
आप यार बिना नइयो रहदा—२
सानू कहदां चंगी गल नही
वादा करके सजन नहीं आया
उडीका विचो रात लग गई—२
राझा चाँदवी दे चंद नालो सोना—२
ओए नी एनू झांकदी रवां—२
माय की करं मैं मनके तेरा कहना—२
राझा ते मेरा रब बरगा—२
कदी टकरे ते हाल सुनावा, सानू रोग लान वालया।



सदके मैं जावां ओना तो साहिबा
जिन्हां नूं तेरियां लोडां

होके निभाणे रहदें, मीरा वांग सब कुछ कहदे
चंगा मंदा कुछ ना बोलदे ओ साहिबा
जिन्हा

कंडिया दे विच मुस्कादे, प्रेम वाली पींग चढ़ादे
प्रेम दे हुलारे खादे, ओ साहिबा
जिन्हा

बडे ना बोल बोलन, बोलन तो पहले तौलन
निश्चय तो कदे वी ना डोल दे ओ साहिबा
जिन्हा

तेरे दर आदे श्रद्धा दे फूल चढ़ा दे
खुद खुदी नूं मिटा दें ओ साहिबा
जिन्हा

हो, गैं दी राख बना दे, विषया नूं मार भगा दे
केवल भक्ति चाहदे ओ साहिबा
जिन्हा



संइयोनी मैं प्रीतम पिया को मनाऊंगी

नयन हृदय का करूंगी बिछौना
प्रेम की कलियां बिछाऊंगी
तन मन धन की भेट करूंगी
हो मैं खूब मिटाऊंगी
विन पिया दुख बहुत होवत है
बहू जून भरमाऊंगी
भेद—भाव को दूर छोड़कर
आत्म भाव जगाऊंगी
जो कहे पिया नहीं माने मेरा
मैं आप गले लग जाऊंगी
पिया गल लागी हुई बड़भागी
जन्म—मरण छुट जाऊंगी
पिया गल लागे सब दुख भागे
पिया विच लय हो जाऊंगी
पल भर भी इसको न रूसाऊंगी।



सांसों की माला पे सिमरूं मैं पी का नाम
अपने मन की मैं जानूं और पी के मन की राम

यही मेरी बंदगी है, यही मेरी पूजा

सांसों

इक था साजिन मंदिर में

और इक था प्रीतम मस्जिद में,
सांसों

प्रेम के रंग में ऐसी छूटी

बन गया एक ही रूप

प्रेम की माला जपते—२ आप बनी मैं श्याम
सांसों

हम और ना ही कुछ काम के
मतवारे पी के नाम के हरदम

सांसों

प्रीतम का कुछ दोष नहीं है

वो तो है निर्दोष

अपने आप से बातें करके हो गई मैं बदनाम
सांसों



साधो, सो सतगुरु मोहे भाये
सत्य नाम का भर—२ प्याला,
आप पिये और मोहे पिलाये

मेले जाई न महंत कहाए
पूजा भेट ना लेवे
माया को सुख दुख कर जाने
संग न स्वप्न चलाए

परदा दूर करे आंखों का
ब्रह्म का दर्श कराए
जाके दर्शनि साहिव तरसे,
अनहद शब्द सुनाए

निश दिन सतसंग में जो राचे
शब्द में सूरत समाए
कहे कबीर ताको भय नाहि
निर्भय पद दशायें
साधो सो.....



सतगुरु सतगुरु बोल मेरे मनवा
इधर—उधर मत डोल मोरे मनवा

भवसागर की गहराई में,
मोती—२ रोल मोरे मनवा,
मधुर—२ रस धोल

इस काया की प्याली में तू
ओम नाम रस धोल मोरे मनवा, मधुर—२ रस धोल

दिल देकर दिलबर मिलता
ज्ञान तराजू तोल मोरे मनवा, मधुर—२ रस धोल

गुरु श्रद्धा गुरु भक्ति प्रथम कर
फिर निज हृदय टटोल मोरे मनवा, मधुर—२ रस धोल

गुरु मुख से जब ज्ञान मिले तब,
कर आनन्द कलोल मोरे मनवा, मधुर—२ रस धोल



हर श्वास में हो सिमरन तेरा,
यूं बीत जाये जीवन मेरा,
ऐसा सुंदर न्यारा, प्यारा जीवन हो मेरा
वंदना तेरी में बीतें सांझ और सवेरा, यूं बीत

नैनो की खिड़की से तुझे, पल—२ मैं नहारूँगी
मन में बिठाकर तेरी आरती उतारूँगी,
डाले रहे तेरे चरणों में डेरा, यूं बीत

हर श्वास

प्यार हो, सत्कार हो, एतवार वस तुम्हारा हो,
सुख दुख आये जायें, तेरी याद का सहारा हो,
हो आ० पे तेरा ही डेरा, यूं बीत जाये

हर श्वास

मोहनी मुस्कान वाला, मेरे दिल का प्यारा है,
मेरे सिर का ताज, मेरी आँखों का तारा है,
सबमें निहारूँ, रूप मैं तेरा, यूं बीत जाये,
हर श्वास में



हमारे गुरु मिले जानी, पाई अमर निशानी

कागा करत गुरु हंसा कीना, दीनी नाम निशानी
हंसा पहुचें सुख सागर में, मुक्ति भरे जहां पानी

जल में कुंभ, कुंभ में जल है, बाहर भीतर पानी
विकसे ओ कुंभ जल माही, समायो ये गत विरले जानी

है यथा साह सनतन में, दरया लहर समानी
धीवर डाल जाल क्या करती, जब मीन पिघल भई पानी

अनुभव का ज्ञान उजवन्ता की वाणी
ये हैं अकथ कहानी, कहत कवीर सुनो भई साधू
जिन जानी तिन मानी।



हर गुरु मुख सतगुरु दी अखियां दा तारा है
जिवें गली नू होंदा ए, हर बृटा प्यारा ए।

तक हासे संता दे ओ तूनां हसदा ए
किसे अख दे विच हंजू, ओ वेख न सकदा ए
वखरा इस दुनियां तो उसदा वरतारा ए। जिवें.....

जद बोल कोई कडवा, मेरे भक्त नाल बोले,
मेरे जोगी सतगुरु दा, उस वक्त हृदय डोले,
कोई गल प्यार बाजों न इसनूं गवाराए।

युग बदल गये संतो, युग ही पहचान करो।
खुश करके संता नूं तुसी जानी जान बनो
उदे बचना विच लुकया साडा सुख सारा ए।

छड़के बड़ियाईयां नूं, तुसी सेवादार बनो
फिर उसदी रहमत दे भक्तों हकदार बनो
भवतां तू समझ लवीं कि उसदा इशारा ए।
जिवें



हरि ओम हरि ओम गाइये—२
 किना सोडा मुख है दिता
 गुरु दी महिमा गाइये — हरि ओम
 किन्हीं सोडी अंखा दितिया
 गुरु दा दर्शन पाइये — हरि ओम
 किने सोडे कान है दिते
 अनहद नाद सुनाये — हरि ओम
 किने सोडे पैर है दिते
 गुरु दे द्वारे जाइये, हरि ओम
 किने सोडे हाथ है दिते
 गुरुदी सेवा करिये, हरि ओम
 किना सोडा मन है दिता
 ज्योत से ज्योत जलाइये, हरि ओम
 किना सोडा हृदय दिता
 गुरु नू विच बिठाइये , हरि ओम
 किना सोडा जीवन दिता
 जीवन मुक्ति पाइये — हरि ओम
 किनी सोडी श्वासा दितिया
 सिमर सिमर सुख पाइये — हरि ओम
 किनी सोडी संगत दिती
 जोत से जोत जलाइये
 किन सोडा सतगुरु दिता
 सदके सदके जाइये — हरि ओम



हे दयालु प्रभु, हे कृपालु प्रभु,
 हृदय में सदा वास तेरा रहे
 तेरे संग में रहे, तेरे रंग में रहे
 हर घड़ी हमको एहसास तेरा रहे
 कोई शिकवा न हो, ना हो कोई गिला
 और मजबूत विश्वास तेरा रहे
 मुख ये गाए प्रभु, तेरी महिमा सदा
 लब पे सुगिरन हर इक श्वास तेरा रहे
 चाहे चेहरे हजारों ये देखें नजर
 सामने चेहरा इक खास तेरा रहे
 तन से सेवा सदा, मन से सुमिरन तेरा
 जिंदगी कर हर इक श्वास तेरा रहे
 है यही याचना, है यही प्रार्थना
 दाता बेजोड़ मन दास तेरा रहे



हीर प्रेम की डोली वै गई,
सीने इश्क दी आग लई ला,
हीर राझे नृ तकदी चली होई, ओदे दिलदा मिलया खुदा—२
ओखा पैदा पावे इश्क दा, मेरया राझणा—२
प्रीतम दा सुख बडा—२
हीर इश्क दी जोगन हो गई, सेज हंजुआ दी दिती विछा—२
तेरी प्रीत, तेरा इश्क, तेरी प्यार
वेख हीर ने लिया कमा —२
तेरी प्रीत नृ दिल विच सांबया वे मेरया प्रीतमा—२
तेरी प्रीत नृ दिल विच सांबया तेरे प्यार विच मैं विक गई हाँ—२
जेडा इश्क विच तारी ला लवे, ओते हो जांदा ए फना—२
तेरे इश्क दा जाटू जिनू वी चढ जाए
फिर वा रती वी बचया ना —२
सइयो प्यार जद हद तो बद जाए, वे मेरया सजना—२
सइयो प्यार जद हद तो बद जाए, फिर कोई दिसदाना—२
जिधर वेखा मेरे प्रीतमा हर पासे तू दिसदा—२
तेरे प्यार विच पैके सोडया सब कुछ ही दिता भुला—२
रांझा हीर ते हीर रांझा होई वे मेरे प्यारया—२
रांझा हीर ते हीर रांझा होई इक दूजे विच गए समा—२
ओखा पैदा है पावे इश्क दा, प्रीतम दा सुख बडा—२
हीर रांझा ते रांझा हीर होई—२
इक दूजे विच गए समा—२



अपना बना के तूने एहसास कर दिया है
ये तेरा शुक्रिया है —२

दुनिया है ऐसा सागर, जिसमें जहर भरा है,
नफरत को मिटाए, वो तेरा रास्ता है
तेरी रहमतों ने आके, हमको बचा लिया है ये....
अपना बना

मैं क्या थी क्या बनी हूं, औकात मैं न भूलूं
तूने मुझे बनाया , ये बात मैं भूलूं
जो कुछ है पास मेरे, तूने ही सब दिया । ये
अपना बना

अब इम्ताहान ना लेना, ऐसी ही बकशी जाउं
बल दे दो सतगुरु इतना, तेरा प्रेम निभाउं
तेरी रहमतों का सागर, मैंने सदा पिया है। ये....
अपना बना



ओ रे ज्ञान मिले, गुरु के मुख से
गुरु मिले सतसंग से, सतसंग मिले प्रेम लग्न से,
कोई जाने ना । ओ रे ज्ञान

मन से बुद्धि परे है बुद्धि से आत्मा —२
तेरी हर श्वास में है, रमता परमात्मा—२
ओ मनवा रे, तेरी हर श्वास में है रमता परमात्मा
कैसे मन बुद्धि से तृ बहा जाने न,
ओ रे ज्ञान

सागर के तट पर पे खड़ा है, पानी तृ पाये न—२
मुकित की राह खड़ा है, मंजिल तृ पाये न—२
ओ मनवा रे मुकित की राह खड़ा है मंजिल तृ
ऐसे अचरज जीवन को तृ, वयों जान पाये न
ओ रे ज्ञान

तेरी हर धड़कन कहती, श्वासों की कीमत कर
जीवन पूँजी को खाए, माया की दीगक—२
ओ मनवा रे जीवन पूँजी को खाए माया की दीमक
बिना गुरु इसकी कीमत, कोई जाने न ।
ओ रे ज्ञान



अजब प्याला इबायत का जो सतगुरु ने पिलाया है
अजब रंगत, अजब मस्ती अजब नशा सा छाया है

नशा इक बृंद का काफी, लबालब पी गए प्याले
भय में डूब गई आंखें तो दुनिया को भुलाया है।

जुंबा गृंगी हुई इस जान के दिल को होशा है बाकी
जिधर देखूं तृ ही तृ है जा हर शय मे समाया है

खुदी की बेख काटी है, दुई का हो गया खातम
हुआ जब साफ आइना, अक्स अपना दिखाया है।

जुदाई और वसल यह था के दिल का वहम ही सारा
गई जब होश उड सारी तो खुद में ही पाया है।

नशे में अबल गुम कर दी जब राम के कृचे
सतगुरु आप में गोता डुबावों में लगाया है।



अखियों करो दर्शन, सतगुरु आये
सतगुरु आए मेरे भाग्य जगाए
अखियों करो.....

मैं मर जावां, मेरिया जीवन अखियां
ऐ अखियों तो मैं गुरु दर्शन लई रखियां
अखियों करो.....

ऐना अखियां तो मैं जिन्द जान वारा
ऐना अखियां तो मैं गुरु नृ निहारा
अखियों करो.....

ऐना अखियां ने कर्म कमाया
जग दा वाली अज साडे घर आया
अखियों करो.....

दुनिया नृ वेख वेख थक गई अखियां
दर्शन कीत अज, रज गईया अखियां
अखियों करो



आ श्यामा तेरे ते रंग पावा
होलियां दा बदला मैं अज लावां

टाल मिटौल क्यों कर दे हो, खेलन से क्यों डरते हो—२
जाने ना दूंगी मैं श्यामा—२ होलियां

ऐसी गल सुनके श्याम हसया—२
गवाल बाल दे विच जाके छुपया, पकडो—२ टौड गए ने श्यामा
होलियां....

रल मिल सखिया ने श्याम फडया—२
फड के गुलाल ओदे मुंह ते मलवा, फेर पुछया ने रंग होर लावां—२
होलियो.....

छडदे लाल ते गुलावी रंग नृ—२
सांवरे सलौने रंग रंगो मन नृ—२
मैं सांवरे दे रंग विच रंग जावां—२ होलियां.....

यमुना किनारे आया करो—२
मुरली मधुर बजाया करो,
मथे तेरे ते मैं तिलक लावो—२ होलियां.....

भर पिचकारी मारी है—२
भीगी मोरी सारी साड़ी है—२
उस साड़ी दा मैं मुल पावां
होलियां.....